# पाठ–15

# अगर इन्सान ही हूँ

**–कुँवर नारायण**

**पाठ की संरचना**


15.1 आइए शुरू करें
15.2 उद्देश्य
15.3 मूल-पाठ
15.4 आइए समझें
15.5 भाषा-शैली


## 15.1 आइए शुरू करें

आप जानते हैं कि मनुष्य जगत् के समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ है। उसके पास प्रेम है, विनम्रता है, ईमानदारी है, ज्ञान है। ये विशेषताएँ एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के प्रति प्रेम भावना उत्पन्न करने में सहायता प्रदान करती हैं। यदि सभी मनुष्य एक-दूसरे से प्रेम करें तो दुनिया कितनी सुंदर लगेगी! हमारे बीच न कोई अमीर होगा न कोई गरीब। मनुष्य के अंदर से लोभ, बेईमानी, चापलूसी जैसी बुराइयाँ खत्म हो जाएँ तो मनुष्य का मनुष्य के प्रति प्रेम बढ़ेगा! 'अगर इन्सान ही हूँ' कविता में कुँवर नारायण ने मनुष्य के नैतिक मूल्यों में आई गिरावटों की बात करते हुए इन पर प्रश्न खड़े किए हैं।

## 15.2 उद्देश्य

**पाठ पढ़ने के बाद आप**

- कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कर सकेंगे।
- कविता में मनुष्य के ऊपर किए गए व्यंग्य को चिह्नित कर सकेंगे।
- कविता की भाषा-शैली की विशेषताएँ बता सकेंगे।

## 15.3 मूल पाठ

तो फिर आप ही बताइए
अगर मेढक नहीं हूँ
तो कैसे रह रहा हूँ कुएँ में?

अगर चूहा नहीं हूँ
तो यह बिल किसका है?

अगर कुत्ते से बेहतर हूँ
तो यह दुम किसकी हिल रही?

अगर चमगादड़ नहीं हूँ
तो उलटा कौन लटका है सदियों से
अँधेरे खंडहरों में?

अगर दीमक नहीं हूँ
तो कौन चाट गया ईमान की फाइलें?

अगर मच्छर नहीं हूँ
तो कौन पी रहा है देश का खून?

सच बताइए
अगर इन्सान ही हूँ
तो इतनी अपमानित क्यों है
इतनी बड़ी सचाई?